संदर्भ

त्रुटि-सुधार का नया शास्त्र

शिवरतन थानवी

यह लेख बच्चों के पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में सहज रूप से होने वाली गलतियों को अपना विषय बनाता है। साथ ही शिक्षकों एवं माता-पिता से आग्रह करता है कि इन्हें बहुत ही स्वभाविकता के साथ देखें तथा बच्चों को इन गलतियों पर हतोत्साहित करने की बजाए सीखने का अहसास कराएं।

कमियों में हम काम कराते हैं। स्कूल में भी कराते हैं और घर से करके लाने को भी काम देते हैं। उत्तर देते हैं या लिखते हैं तब बच्चे त्रुटियां करते हैं। कोई कम, कोई ज्यादा। हम उनमें सुधार करते हैं। बच्चे आगे बढ़ते हैं। यों शिक्षा होती है।

यह एक साधारण-सी बात है, सभी जानते हैं। मां-बाप भी जानते हैं और शिक्षक भी जानते हैं। बच्चा गलती करेगा, हम सुधारेंगे और शिक्षा होगी। यह एक सनातन शिक्षा-सूत्र है। बहुत सरल-सीधा रास्ता है। प्रायः सभी इसी मार्ग पर चलते हैं। लेकिन हमने अनुभव किया है कि यह मार्ग कांटों से भरा हुआ है। बहुत दुखदायी है। सरल मार्ग यह नहीं है, वह अभी और आगे है। जो मां-बाप बच्चों को लेकर सचमुच गंभीरता से पढ़ाने बैठते हैं या जो शिक्षक कक्षा में बच्चों को लिखित और मौखिक अभ्यास पर बल देते हैं वे जानते हैं कि त्रुटियों को सुधारने का काम आसान नहीं है। हर माता-पिता या शिक्षक के अलग-अलग अनुभव होते हैं। सुधार के अलग-अलग तरीके होते हैं।

आप याद कीजिए, आपका क्या तरीका है ? क्या आप हर गलती पर बच्चे को टोकते हैं या लाल पेन से गोला लगाते हैं ? कोई वक्त था जब कॉपियां जांचने के लिए छोटी-बड़ी स्कूलों में एक-एक ऐसी पेंसिल हर शिक्षक को दी जाती थी जो एक तरफ लाल और एक तरफ नीली होती थी। शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय-महाविद्यालय सिखाते थे कि हर त्रुटि पर लाल गोला करो और नीली तरफ से लघु हस्ताक्षर करो व निर्देश लिखो। फिर पेन दिए जाने लगे। एक लाल, एक नीला। स्याही भरो और काम में लो। बाद में सस्ते बॉलपेन आने लगे तो शिक्षक खुद अपने पेन से काम लेने लगे। हमने ये तीनों समय देखे हैं। हमने हमारे शिक्षक को कॉपियां जांचते देखा है और हमने खुद भी कॉपियां जांची हैं। टोकना और लाल गोले लगाना शिक्षक की शान समझी जाती थी। कक्षा में शिक्षक की बादशाहत होती थी। टोकना और लाल गोले लगाना उसकी बादशाहत की निशानी थी।

बादशाहत की दूसरी निशानी थी डांटना और डण्डा बजाना। बच्चा त्रुटि करता और मास्टरजी का डण्डा चमकता या डांट पड़ती। घर पर भी माता-पिता मास्टरजी का अनुकरण करते। उन्होंने अपनी स्कूल में मास्टरजी को जिस तरह से पढ़ाते देखा था वे भी उसी तरह से पढ़ाते। डण्डा चमकाते या डांटते-डपटते। हर त्रुटि पर नाराजगी व्यक्त करना उनका तरीका था। उनका तरीका माने उनकी तकनीक। तकनीक का शास्त्र माने तकनीकी। वह वक्त था जब हर त्रुटि पर लाल

लेखक परिचय :

शिक्षा और साहित्य में गहरी रुचि। प्राथमिक शिक्षक से शिक्षा विभाग में संयुक्त निदेशक तक 40 वर्ष कार्य करने के बाद 1988 में सेवा निवृत्त। शिविरा पत्रिका (मासिक) एवं नया शिक्षक/टीचर टुडे (त्रैमासिक) का 13 वर्ष से पूर्णकालिक संपादन।

पुस्तक :

आज की शिक्षा कल के सवाल, कोबायाशी की कहानी तथा बच्चे और हम।

सम्पर्क :

मोची-स्ट्रीट, फलौदी, जोधपुर-342301(राज.)

गोले लगाना या हर त्रुटि पर नाराज होना, डांटना-डपटना या डण्डा बजाना अच्छे प्रभावशाली शिक्षक की तकनीकी थी, टेक्नोलजी थी।

यह सही है कि सीखना पहले कष्टदायक है फिर सुखदायक। तकलीफ तो उठानी ही पड़ती है सीखने के अभ्यास के दौरान। लेकिन हमें लगातार यह भी सोचना चाहिए कि हम यह तकलीफ कितनी कम कर सकते हैं। एक तकलीफ ऐसी है जो हमारे ही कारण उन्हें पहुंच रही है। हम अभ्यास ऐसा देते हैं जिसका कठिनाई स्तर बच्चे की क्षमता-सीमा से बहुत ऊंचा होता है और इस कारण उसमें त्रुटियां होने की संभावना अधिक है। हम अभ्यास वह कराएं जिसमें विद्यार्थी द्वारा त्रुटियां होने की संभावना न्यून हो या शून्य हो जाए। ऐसा सवाल बनाएं कि उत्तर में वह जो लिखे वह सही ही हो, जो बोले वह सही ही बोले। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के पीछे यही उद्देश्य होता है। रिक्त स्थानों की पूर्ति भी इसी उद्देश्य से कराई जाती है। खूब दें ऐसे प्रश्न। अंग्रेजी में सब्स्टीट्यूशन टेबलों का निर्माण इसे ही ध्यान में रख कर किया जाता है। ढांचा (स्ट्रक्चर, संरचना) बदले बिना कोई शब्द (क्रिया, विशेषण, वचन, लिंग आदि) रूप बदलकर वही वाक्य ज्यों का त्यों या ढांचा एक सा बदलकर (एक्टिव-पेसिव) वापस बोलने-लिखने का अभ्यास भी इसी सकारात्मक अभ्यास का अंग है (जैसे स्टैनर्ड ऐलन की 'लिविंग इंग्लिश स्ट्रक्चर', लौंगमेन)।

दूसरी विधि यह कि दस त्रुटियां करे वह तो हम दो का ही सुधार करें, हर त्रुटि के सुधार की विधि काम में ही न लाएं। हर त्रुटि पर गोला न लगाएं, हर त्रुटि पर डांट-डपट की पद्धति त्याग दें। यह भी एक तकनीक है। त्रुटि-सुधार का नया शास्त्र है।

तीसरी विधि यह है कि त्रुटि हो तो भी हम नाराजगी न व्यक्त करें, उल्टे शाबाशी दें। शाबाशी इसलिए नहीं कि त्रुटि की है बल्कि इसलिए कि उसने सीखने की कोशिश की है। बच्चे को यह महसूस कराना शिक्षा-शास्त्र का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है कि वह सीखने में लगा हुआ है, कि वह कोशिश कर रहा है, कि उसकी कोशिश में कोई कमी नहीं है, कि उसकी इन कोशिशों से उसको सिखाने वाले मां-बाप या शिक्षक बहुत प्रसन्न होते हैं। बहुत आनंदित होते हैं, कि वे शाबाश कह कर बच्चे की प्रगति पर अपना संतोष व्यक्त करते हैं। यह छोटी-सी लगने वाली बात बहुत बड़ी बात है। आप संतोष व्यक्त करें तो बच्चा आगे बढ़ेगा। हताश नहीं होगा। आपका पहला कर्तव्य यही है कि उसमें हताशा पैदा न होने दें।

बच्चा एक दिन मुझे पूछता है कि उसने जो वाक्य बनाया है क्या वह सही है। मैं जानता हूं वह सही नहीं है पर मुझे यही ठीक लगा कि कहूं - सही है। मुझे लगा कि फिलहाल यों कहना ही उचित है। 'ज्यादा सही' के लिए बच्चे को गलत ठहराना, सुधारना और दूसरा वाक्य बनवाना अर्थात् वहीं की वहीं क्लास लगाना अभी हम स्थगित रखें तो क्या बुराई है ? हम तो क्लास में भी अधिक क्लास लगाने के पक्ष में नहीं हैं, शिक्षक का भी अधिक शिक्षण पर जोर देने के पक्ष में नहीं है। जो वाक्य इसने बनाया है वह थोड़ा-बहुत भी सही के करीब हो तो उसे सही कहना शिक्षण की एक उचित और अच्छी प्रविधि है। अधिक शुद्धता की हर बार अपेक्षा करने से विकास में बाधा ही पड़ेगी। बच्चे ने टूटा-फूटा जो किया है उसे स्वीकार करने और शाबाशी देने से बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा, वह अधिक अभ्यास करेगा और विकास की गति तीव्र होगी। वह यों क्रमशः स्वतः शुद्धता की ओर बढ़ेगा, अधिक विश्वास के साथ बढ़ेगा।

यही कॉपी में लिखित काम कराने में या गृह कार्य कराने में होना चाहिए। हर त्रुटि पर लाल गोला लगाकर बच्चे को हतोत्साहित करने से क्या फायदा ? उत्साह बढ़ाने वाला अंश कॉपी में जहां कहीं हो उस पर सही का निशान लगाओ, शाबाशी दो, तो उत्साह बढ़ेगा। एक-दो त्रुटियां बता दो, सुधार करा दो, शेष भाग-ज्यादा भाग-शाबाशी का हो तो कितना अच्छा!

मैं तो यहां तक कहूंगा कि अधिकांश त्रुटिपूर्ण शब्दों या वाक्य-प्रयोगों में आप हां-हां ही कहते जाएं। जब बार-बार हां कह चुकें तो एक-दो शब्द या वाक्य सही करके नया प्रकरण ले लें। यह चौथी विद्या है एक प्रकरण पर अधिक समय तक न रुकना। अर्थात् नया प्रकरण शीघ्र लेना, नया पाठ शुरू करने में जरा भी देर न करना। पढ़ाने का अपना-अपना तरीका होता है। आपका यदि यह तरीका है कि आप सघन शिक्षण करते हैं, जान-बूझकर समय लेते हैं, तो यह अलग विधि है। मेरे एक शिक्षक वर्ड्सवर्थ की 'प्रिल्यूड' कविता के एक अंश पर महीनों लगा दिया करते थे। खूब रस ले-ले कर पढ़ाते, शब्दों के पीछे और भाव के भीतर दूर-दूर तक चले जाते। वह उनका तरीका था, उनकी विधि थी, विद्यार्थी को काव्य-रस से सराबोर कर देने की। उनके ही दूसरे साथी कक्षा के दरवाजे बंद करा देते और झूम-झूम कर कविता का यों उच्चारण करते मानो कविता उनके अंग में साक्षात् उतर आई हो। लगता कि हमारा शिक्षक नहीं, कवि बोल रहा है। नाटकीयता इतनी प्रबल और प्रामाणिक कि लगे ही नहीं कि नाटकीयता लाई गई है। यह भी एक तरीका है पाठ को पढ़ने वाले के दिल में उतारने का। इन दोनों उदाहरणों में पढ़ाने वाले का पाठ से इतना गहरा तादात्मय हो जाता है कि समय गौण हो जाता है। गौर करें, यह सामान्य विधि नहीं है, सामान्य शिक्षक के बस की बात नहीं है।

सामान्य शिक्षक असामान्य बनना चाहे तो जरूर कभी ऐसी तन्मयता का प्रयत्न करे। ऐसी स्थिति का तो मुकाबला ही नहीं है। गणित, अंग्रेजी, हिन्दी-कोई विषय हो सकता है। गणित का शिक्षक बोर्ड पर खुद सवाल हल करेगा और छात्रों से भी कराएगा, भूगोल

पढ़ाने वाला नक्शों पर नक्शे टांगता जाएगा, दुनिया के कोने-कोने की सैर करा देगा। अंग्रेजी शिक्षक बड़ी कक्षाओं में प्रगल्भ व्याख्यान देगा या नाटकीय प्रस्तुतियां करेगा और छोटी-कक्षाओं में ड्रिल करा-करा के पूरी स्कूल को गुंजायमान करेगा।

यह सब सही, पर सही शब्द और सही उत्तर का अभ्यास नहीं कराया, सही शब्द, सही वाक्य और सही उत्तर की ड्रिल नहीं कराई, तो गलतियों पर गलतियां बच्चा करता रहेगा और हम झुंझलाते रहेंगे, झल्लाते रहेंगे, खीझते रहेंगे, लाल गोले से कॉपियां भर देंगे और डांटते-डपटते डण्डे बजाते रहेंगे।

बताइए, कौन-सा विकल्प पसंद है आपको ? जो भी आपको उपलब्ध हो थोड़ा वह शिक्षा-साहित्य देखिए। उसका अनवरत सतत स्वाध्याय कर, खुद सोच-विचार कर, क्या खुद का अपना विकल्प नहीं बनाएंगे ? किसी ने उचित ही कहा है 'विकल्पहीन नहीं है यह दुनिया' (किशन पटनायक)।

लीक से हटकर चलने में हमें कुछ कठिनाइयां जरूर आएंगी। यदि हमने हमारे नए कदम का, हमारी नई प्रविधि का, औचित्य ठीक से समझ लिया है तो अब इसे हमारे शुभचिंतकों तक भी पहुंचाना होगा, उनको भी सही परिप्रेक्ष्य में समझाना होगा। विद्यालय प्रधान भिन्न मत के हो सकते हैं। वे जरूर एतराज करेंगे। मैंने जब मेरे विद्यालय में यह प्रविधि प्रारंभ की तो मेरे प्रधानाचार्य मुझसे सहमत नहीं थे। वे बार-बार यही कहते थे कि उन्होंने तो अपने प्रशिक्षण काल में इस तरह की कोई बात कभी नहीं पढ़ी या सीखी। बिल्कुल सही। पाठक जानते हैं कि किसी शिक्षक ने अब आज जो बात सीखी है या पढ़ी है या स्वतः पैदा की है वह तब प्रशिक्षण काम में कहां से आ सकती थी ?

वे प्रधानाचार्य मेरे एक और नवाचार से परेशान थे। मुझे साल भर में जो पढ़ाना होता था उसका मंथन करके, भली प्रकार विस्तार से विचार करके, मैं स्वयं अपने स्पष्ट शिक्षण बिन्दु या कहें शिक्षण सोपान तय कर लेता था और एक मोटी कॉपी में करीब 250 ऐसे बिंदुओं की सूची ब्यौरेवार लिख लेता था। उस कॉपी में इन बिन्दुओं के आगे शिक्षण में सहायक उदाहरण या अभ्यासों के संकेत भी लिख देता। अब डायरी भरनी होती तब उसमें बिन्दु की संख्या लिख देता, बस। अब प्रधानाचार्य नाराज। वे तो परम्परागत जो होता आया है वही देखने के आदी हैं। वही देखेंगे। हमने मेहनत की है, सोचा है, कोई नया काम और अच्छा काम करने की तरफ कदम बढ़ाया है, यह नहीं देखेंगे। मैंने डायरी भरने की यह जो पद्धति शुरू की थी उसके पीछे बल था मेरे एक ऐसे प्रोफेसर का जो कहा करता था कि पाठ-योजनाओं के लम्बे-चौड़े विवरण में क्या रखा है ? तुम चाहो तो उसे लम्बे कागज पर तैयार करो या रद्दी-सद्दी अखबार के किसी कोने पर, टुकड़े पर और चाहे मन में तैयार करो, काम तो वही आएगा जो तुम क्लास में करोगे। बस, फिर क्या था, डायरी (टीचर्स डायरी) में लम्बे विवरण भरने की प्रथा को मैंने तिलांजली दे दी और यों शिक्षण बिन्दु निर्धारित करके डायरी का कंकाल बना दिया। डायरी हमारी, तरीका भी हमारा। दिखावा कंकाल का, पर बात मार्के की। कम से कम मैं तो यही समझा।

एक प्रधानाचार्य ऐसे भी मिले जिन्होंने मेरे हर नए कदम का स्वागत किया। सहयोग दिया, सहायता की। शब्द भंडार-शिक्षण परियोजना की अभ्यास सामग्री को चक्रांकित कराने के लिए जितना कागज मैंने मांगा उन्होंने दिया और चाय पर अपने कक्ष में बुला-बुलाकर मेरे नए काम की संकल्पना के स्वरूप को गहराई से समझने की कोशिश की।

विद्यालय प्रधान से हमारी बातचीत विद्यालय में हो सकती है किंतु अभिभावकों को कैसे बताएंगे ? दो रास्ते हैं - एक तो अध्यापक-अभिभावक संघ (पी.टी.ए.) की बैठक में स्पष्ट करें और दूसरे, विद्यार्थियों से कहते रहें कि वे घर पर इसकी विशेषता को बताएं।

असहमत और विरोध तो हर नई बात का हर जगह होता ही है। यदि आप अपने शिक्षण को अधिक आसान और असरदार बनाना चाहते हैं तथा अपने शिक्षण को, क्लासवर्क तथा होमवर्क दोनों को, व्यावहारिक दृष्टि से और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पढ़ाने वालों व पढ़ने वालों, दोनों के, अनुकूल बनाना चाहते हैं तो हर युग में हर जगह कुछ तो कोशिश करेंगे ही। कीजिए, जो अच्छा लगे व सही लगे वह जरूर कीजिए। विद्यालय प्रधान तथा मां-बाप को भी साथ लीजिए। अकेले भागेंगे तो उलझन पैदा होगी। लोग आपको गलत समझेंगे और बाधाएं खड़ी कर देंगे। वातावरण भी बनाइए और काम भी कीजिए। सुधार का नया शास्त्र निर्माण करना है तो आपको अभी और कई नए-नए काम करने होंगे। हर त्रुटि पर लाल गोले लगा कर सही शब्द या सही वाक्य बच्चे की कॉपी में रोज लिखते जाना कितना प्राणान्तक काम है, यह करने वाले सभी शिक्षक जानते हैं। समस्या यही है कि सभी शिक्षक और सभी अभिभावक और सारे के सारे शिक्षाधिकारी और सबसे ऊपर हमारे शिक्षक प्रशिक्षण शिरोमणि इसे लाभकारी-महालाभकारी मानते चले आ रहे हैं, जब कि वास्तव में यह नितांत अलाभकारी है। हमने जो नई प्रविधि बताई है वह यदि आपको लाभकारी लगे तो इस पर अमल करें और इसके अनुकूल वातावरण निर्माण करें। हो जाए थोड़ा नवचिंतन ? शिक्षक, शिक्षाधिकारी या शिक्षक प्रशिक्षण - किसी भी स्तर पर ! ◆